Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-14, Issue-1, June-2020
www.researchguru.net

# भारत की विदेश नीति में अटल बिहारी बाजपेयी का योगदानः एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन

डॉ. रणवीर सिंह ठाकुर

राजनीति विज्ञान एवं लोकप्रशासन विभाग डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर(म.प्र.) Email – ranvirthakur145@gmail.com Mob. - 9424454305

***सारांशः***— *भारतीय विदेश नीति को अटल ने अपने अटल इरादो से काफी प्रभावित किया तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अटल बिहारी बाजपेयी का युग (25 दिसम्बर 1924 से 16 अगस्त 2018)। अटल बिहारी बाजपेयी भारत के दसवें प्रधानमंत्री थे। वे पहले 16 मई से 1 जून 1996 फिर 19 मार्च 1998 से 22 मई 2004 तक भारत के प्रधानमंत्री वे उन्हे भारतीय राजनीति का प्रखर वक्ता कहा जाता है, वे हिन्दी के कवि पत्रकार एवं प्रखर वक्ता थे। वे भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में से एक थे। और 1968 से 1973 तक अध्यक्ष भी रहे। भारत रत्न से सम्मानित किया गया। बुनियादी रूप से अटल बिहारी बाजपेयी विदेश नीति के शिल्पकार थे, जो चीन, पाकिस्तान, एशिया आदि के साथ संबंधो को बनाये रखने के पक्षधर थे। वे बेहद सजग, सचेत गंभीर थे। बाजपेयी को भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत, संयम और संकल्प का पालन करने वाले एक समावेशी कुशल रणनीतिकार, वक्ता, विवेकवादी के रूप में याद किया जाएगा। अटल के अटल इरादे को पूरी दुनिया ने मई 1998 को देखा जब उन्होने पोखरण में परमाणु बमों का सफल परीक्षण कर इंदिरा गाँधी के 1974 के कार्य को आगे बढ़ाते हुए भारत को एक महाशक्ति का श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। और हम परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की सूची में अपना नाम दर्ज कराने में सफल हुये, यह भारत के लिए भारतीयो के लिए भारतीय सेना के लिए, भारतीय वैज्ञानिको के लिये एक अविस्मरणीय समय था। जिसके बाद भारत का विश्व पटल पर एक नये राष्ट्र, नई सोच और शक्तिशाली भारत का उदय हुआ। वह विश्व को शांति का संदेश दे रहे थे। वही दूसरी और पाकिस्तान 1999 में अपनी मित्र की पीठ में खंजर घोप रहा था, और एक फिर 1948, 1965, 1971 के बाद हमे 1999 में पाकिस्तान से कारगिल युद्ध करना पड़ा एक बार फिर भारतीय सेना ने पाकिस्तान को मुँहतोड़ जबाब दिया। 1998 में परीक्षण और फिर 1999 में कारगिल युद्ध ने अटल बिहारी बाजपेयी को दुनिया मे अपने नेतृत्व कुशलता और रणनीति का कुशल नेता साबित किया। और अटल के अटल इरादे का लोहा दुनिया ने माना क्योंकि परीक्षण के समय अमेरिका के साथ अन्य देशों ने भी हम पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिये थे उसके बाद भी अटल का अटल इरादा डिगा नही और हमने विस्फोट किया।'*

**पस्तावनाः**— किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति मुख्य रूप में कुछ सिद्धातों हितो एवं उद्धेश्यों का समूह होता है। जिनके माध्यम से वह राष्ट्र दूसरे राष्ट्रो के साथ–संबंध स्थापित करके उन सिद्धातों की पूर्ति करने हेतु कार्यरत रहता है। इसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की अपनी विदेश नीति होती है। विदेश नीति के प्रमुख उद्धेश्यों के अध्ययन से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि विदेश नीति के उद्धेश्य व लक्ष्यो में थोड़ा–सा अन्तर है। कई विशेषज्ञ इस संन्दर्भ की विदेश नीति (एकचलन) तथा विदेश नीतियों को (बहुचलन) के संदर्भ में देखते है। उनका मानना है कि राष्ट्र की विभिन्न गतिविधियों का समन्वय ही विदेश नीतियाँ है[2] जो उद्धेश्य को इंगित करती हैं। तथा अल्पकालीन होती है। दूसरी और विदेश नीति राष्ट्र की सम्रग नीति का स्वरूप है जो लक्ष्य की ओर इशारा करती है तथा दीर्घकालीन होती है। अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था दोस्त बदले जा सकते है, मगर पड़ोसी नही। भारतीय विदेश नीति को इसी तर्ज पर अटल ने अपने अटल इरादो ने काफी प्रभावित किया तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत रत्न से सम्मानित किया गया।''

भारत रत्न'' अटल बिहारी बाजपेयी देश के एक मात्र राजनेता थे, जो 4 चार प्रातों से 6 बार लोकसभा क्षेत्रो का नेतृत्व करने मे सफल रहे, उत्तर प्रदेश के लखनऊ, बलरामपुर, गुजरात के गाँधीनगर, मध्यप्रदेश के ग्वालियर और विदिशा एवं देश की राजधानी नई दिल्ली संसदीय सीट से चुनावी सफर सफलता पूर्वक तय किया।[1] उन्होनें ब्रिटिश शासन काल और

गाँधी युग से राजनीतिक सफर तय किया उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में हिस्सा लिया और जेल भी गये। 1951 मे जब राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के सहयोग से भारतीय जनसंघ पार्टी का गठन हुआ तो आर.एस.एस. और जनसंघ के वरिष्ठ नेता श्यामाप्रसाद मुखर्जी के साथ अटल बिहारी बाजपेयी की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही।` पंडित जवाहरलाल नेहरू भी बाजपेयी के व्यक्तिव से इतने प्रभावित हुये, कि उन्होनें कहाँ आने वाले समय में यह लड़का देश का प्रधानमंत्री बनेगा और हुआ भी वही– बाजपेयी को भारतीय राजनीति का सर्वश्रेष्ठ वक्ता और उभरते हुए सांसद से सम्बोधित किया। अटल बिहारी बाजपेयी अनोखी प्रतिभा के धनी थे। न केवल उन्होने अपने विपक्षियों को बल्कि विश्व को भी प्रभावित किया। 1962 के लोकसभा चुनाव में फिर बाजपेयी लखनऊ से लड़े किन्तु हार गये जिसके बाद वह राज्य सभा सदस्य चुन लिये गये।[3]

, बाजपेयी ने शीत युद्धोत्तर काल में अमेरिका, इजराइल और पूर्वी एशिया से अपने संबंधो को और बेहतर किया। जिससे भारतीय हितो और भारत निर्माण को फायदा हुआ। उनकी दूरदर्शिता और सफल कूटनीतिज्ञता से उन्होनें पूरी दुनिया को प्रभावित किया बाजपेयी जी के शासन काल के दौरान उनकी विदेश नीति से अमेरिकी सोच और में भारत के प्रति बदलाब और बिल क्लिटन की भारत यात्रा से सम्बंधो में सुधार, भारत–अमेरिकी संबंध 21वी शताब्दी की एक परिकल्पना को साकार करते हुये विश्व के दो सबसे बड़े लोकतंत्र एक साथ नजर आये और वैश्विक सामाजिक सहयोग के एक नए युग का सूत्रपात हुआ।

अमेरिका इजराइल जैसे नये सहयोगी और भारत की सुरक्षा छतरी कही जाने वाले पुराने दोस्त रूस के समय रणनीतिक साझेदारी की नीव अटल की विदेश नीति का ही पहलू था। अटल बिहारी बाजपेयी ने न केवल अपनी कुशल नेतृत्व की दम पर विदेशो को अपनी नीति से प्रभावित किया बल्कि घरेलू नीतियों में भी बहुत सारे ऐसे मुद्दे जो विवादस्पद थे, उनके भी सुधार किया चाहे कावेरी जल विवाद को सुलझाने का अभूतपूर्व प्रयास किया साथ ही स्वर्णिम चतुर्भुज योजना, राजकोषीय उत्तरदायित्व, बजट प्रबंधन अधिनियम, दूरसंचार क्रांति, पीएसयू का निजीकरण और सर्वशिक्षा अभियान की सराहना आज भी की जाती है। बुनियादी रूप से अटल बिहारी बाजपेयी विदेश नीति के शिल्पकार थे, जो चीन, पाकिस्तान, एशिया आदि के साथ संबंधो को बनाये रखने के पक्षधर थे। वे बेहद सजग, सचेत गंभीर थे। बाजपेयी को भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत, संयम और संकल्प का पालन करने वाले एक समावेशी कुशल रणनीतिकार, वक्ता, विवेकवादी के रूप में याद किया जाएगा। अटल के अटल इरादे को पूरी दुनिया ने मई 1998 को देखा जब उन्होने पोखरण में परमाणु बमों का सफल परीक्षण कर इंदिरा गाँधी के 1974 के कार्य को आगे बढ़ाते हुए भारत को एक महाशक्ति का श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। और हम परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की सूची में अपना नाम दर्ज कराने में सफल हुये, यह भारत के लिए भारतीयो के लिए भारतीय सेना के लिए, भारतीय वैज्ञानिको के लिये एक अविस्मरणीय समय था। जिसके बाद भारत का विश्व पटल पर एक नये राष्ट्र, नई सोच और शक्तिशाली भारत का उदय हुआ। दोस्त बदले जा सकते है, मगर पड़ोसी नही। की तर्ज पर अपनी कुशल विदेश नीति का परिचय देते हुये अटल बिहारी स्वयं शांति की बात रखने दिल्ली से लाहौर बस से गये, (नेता अटल बिहारी बाजपेयी और अभिनेता देवानंद) वह हमेशा भारत के पड़ोसी देशों से संबंधो के पक्षधर थे। और अच्छे सम्बधें की वकालत किया करते थे। दिल्ली–लाहौर बस सेवा का बाजपेयी का मकसद अपनो से अपने मिल सके, और इसी उध्देश्य से वह स्वयं बस मे बैठकर पाकिस्तान गये, किन्तु पाकिस्तान ने हमेशा उनके नेक इरादे को शंका की दृष्टि से ही देखा, और भारत के साथ धोखे की राजनीति की, पाकिस्तान की गंदी सोच का भारत ने समय–समय पर बेहतर दबाब भी दिया।[4]

1998 में परीक्षण और फिर 1999 में कारगिल युद्ध ने अटल बिहारी बाजपेयी को दुनिया मे अपने नेतृत्व कुशलता और रणनीति का कुशल नेता साबित किया। और अटल के अटल इरादे का लोहा दुनिया ने माना क्योंकि परीक्षण के समय अमेरिका के साथ अन्य देशों ने भी हम पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिये थे, उसके बाद भी अटल का अटल इरादा डिगा नही और हमने विस्फोट किया। वाजपेयी ने अपनी विदेश नीति को आगे बढ़ाते हुये 2003 में चीन यात्रा की ओर कुशल रणनीति की दम पर चीन परोक्ष रूप से सिक्किम को भारत का अंग मानने पर राजी हो गया। इंदिरा गाँधी सरकार के आपातकाल के बाद 1977 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी की सरकार बनी ओर बाजपेयी मोराजी सरकार में विदेश मंत्री बने, विदेश मंत्री के रूप में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का नेतृत्व करते हुये हिन्दी में भाषण दिया और विश्व को काफी प्रभावित किया।

उन्होंने कभी असंसदीय भाषा का इस्तेमाल नही किया। अटल बिहारी तीन बार भारत के प्रधानमंत्री बने, 1996 मे 13 दिन, 1998 में 13 महीने और 1999 से 2004 का कार्यकाल बाजपेयी ने पूरा किया। उन्होंने अपनी कविताओं से जो जिया हो भारत भारतीय के लिए, जिसने ताउम्र केवल राष्ट को जिया, कविता के शब्दों से संसद के गर्भगृह को सुशोभित किया।[5] वही पोखरण परमाणु परीक्षण से विश्व को भारत की शक्ति का आभास कराया, जबकि कारगिल युद्ध से पाकिस्तान को आइना दिखाया शिन्दे की छावनी में कृष्णा बाजपेयी की कोख से जन्मे भारत रत्न ने अपनी शख्सियत का लोहा विश्व को मनवा लिया। 24 वर्षो (1998 के उल्लेखनीय नियंत्रण के पश्चात् किए गए नाभिकीय परीक्षण भारतीय विदेश नीति में ''नैतिकवाद से यथार्थवाद'' में रूपांतरण को इंगित करता है। डॉ. अब्दुल कलाम के अनुसार – भारत के ''अग्नि'' और ''पृथ्वी'' जैसे प्रक्षेपात आणविक अस्त्रों को आसानी से अपने साथ ले जा सकते है। वही शांति की बात करने वाला भारत नबम्बर 1998 में दक्षिणी लेबनान में भारतीय इन्फैट्री सहायता देने वाला देश बना। प्रत्येक भाग में जहाँ UNO शांति सैनिको की तैनाती की जाती है। वही अटल बिहारी बाजपेयी ने जय जवान जय विज्ञान का नारा दिया।

अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के गुट निरपेक्ष देशों का 12वॉ शिखर सम्मेलन 23 सितम्बर 1998 को डरबन आफ्रीका गये, डरबन घोषणा में गुटनिरपेक्ष की प्रासांगिकता पर बल दिया, सार्क पर भी अटल की नीति का प्रभाव पड़ा और 1998 में सार्क देशों के लिए भावात्मक प्रतिबंध हटा लेने के साथ क्षेत्र भर में व्यापार उदारीकरण तेज करने के लिए महत्वपूर्ण पहल की। जून 2000 में बाजपेयी ने यूरोप यात्रा कर इटली, पुर्तगाल व यूरोपीय संघ के शिखर सम्मेलन में भाग ले रहे नेताओ से बातचीत की। 15 सदस्यीय यूरोपीय संघ ने भारत को सहयोगी का दर्जा दिया जो प्रतिस्ठता की बात है। वही अटल बिहारी बाजपेयी ने दक्षिण पूर्व एशिया, भारत की पूर्वोन्मुखी नीति (Look East Policy) को बढ़ावा दिया। भारत की दक्षिण पूर्व एशियाई देशो में बढ़ती रूची का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उदाहरण मेकांग गंगा परियोजना है। मेकांग–गंगा सहयोग (Mekong Ganga Coopration MGC) नाम से गठित 6 राष्ट्रो के इस समूह में भारत व लाओस के अतिरिक्त मेकांग नदी के अन्य तटीय राष्ट्र म्यांमार, थाइलैण्ड, कम्बाडिया, वियतनाम शामिल है। अटल बिहारी बाजपेयी व ब्रिटिश प्रधानमंत्री येनो ब्लेयर ने 2001 में 5 पृष्ठों के नई दिल्ली घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर दिये। वही 6–8 सितम्बर 2000 को न्ययार्ड में UNO में सहशास्त्री सम्मेलन को बाजपेयी ने सम्बोधित किया। 11 व 13 मई 1998 को भारत सरकार द्वारा पोखरण में 24 वर्षो के अन्तराल के बाद दोबारा पाँच परमाणु परीक्षण करने से भारतीय प्रधानमंत्री की विदेश नीति पर बहुत प्रभाव पड़ा, और विभिन्न प्रकार के विदेशी प्रतिबंधो का सामना करना पड़ा।[6]

- 1961 के विदेशी सहायता अधिनियम के अन्तर्गत की जाने वाली सहायता बन्द कर दी गयी।
- हथियार अधिनियम के अन्तर्गत रक्षा सामान, रक्षा सेवाओ तथा सभी रक्षा लाइसेन्स रद्व कर दिये गये।
- अन्तर्राष्ट्रीय संगठनो ने भी कर्ज, वित्तीय सहायता रोक दी।

इस प्रकार से अमेरिका का यह व्यवहार आश्चर्यजनक नही था, क्योंकि पहले भी अमेरिका इस तरह की कार्यवाही करवा चुका था। 1974 में भारत द्वारा शांति पूर्ण परमाणु परीक्षण के बाद 1990 के दसक में प्रक्षेपात नियंत्रण व्यवस्था के अन्तर्गत 1992 में भी क्रायोजेनिक इंजन न देने का रूस पर दबाब डाला था। इन सबके बाबजूद भी अटल सरकार के अटल इरादों पर कोई फर्क नही पड़ा और सरकार देशहित में निरंतर निर्णय लेती रही। इसका उल्टा असर अमेरिका पर पड़ा और 18 जून 1998 के व्यापक प्रतिबंधो के बाबजूद इस कार्यवाही में भी कहा गया कि इसका प्रभाव सरकार पर पड़े व्यक्तियों पर नहीं और कुछ ही समय के बाद विश्व बैंक द्वारा भारत के प्रान्त आंध्रप्रदेश हेतु 543 मिलियन ऋण की मंजूरी तथा बाद में लंबित पड़े 376 मिलियन कर्ज की स्वीकृति अमेरिका के इस नरम रूप की पुष्टि करता है। राष्ट्रपति क्लिंटन ने भोजन दवा इत्यादि पर से प्रतिबंध समाप्त कर दिया।[7]

इसके परिणाम स्वरूप अटल की विदेश नीति मजबूत होकर उभरी और स्वयं अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन 2000 में पाँच दिवसीय यात्रा से दोनों देशो भारत–अमेरिका के मध्य एक नई शुरूआत हुई। और अमेरिका को बाजपेयी सरकार के प्रति नरम भाव अपनाना पड़ा क्योंकि (1) अफगानिस्तान में तालिबान के रूप में अलकायदा पनपा। (2) दक्षिण एशिया का परमाणु क्षेत्र बनना। (3) भारत का कम्प्यूटर उधोग में एक बड़ी शक्ति बनना।यह यात्रा भारत के प्रति अमेरिकी झुकाव की थी और 24 वर्षो बाद किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की यह सद्भावना यात्रा थी। प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने भी 07–19 सितम्बर 2000 को अमेरिका की यात्रा की और दोनो देशों के सम्बन्धों में मधुरता आई।[8]

09 व 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका में हुए आतंकवादी हमले व उसके बाद अमेरीका की अफगानिस्तान व ईराक के विरूद्ध युद्ध कार्यवाही से हुआ। भारतीय रक्षा सलाहकार बृजेश मिश्र, रक्षामंत्री फर्नाडीज, गृहमंत्री आडवाणी और प्रधानमंत्री बाजपेयी ने अमेरिका की यात्रा की वही अमेरिकी विदेशमंत्री कोलिन पावेल ने तीन बार रक्षा सचिव के रेंज फील्ड, उपविदेश सचिव आर्मीटेज तथा दक्षिण एशिया की सहायक सलाहकार क्रिस्टिना रोडा ने भी भारत की यात्राएँ की।

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मुद्दा सहयोग की और अधिक विकसित करने के महत्वपूर्ण रहा। इसी संन्दर्भ में दोनो देशों के मध्य जनवरी 2000 में आतंकवाद से निपटने हेतु एक संयुक्त कार्यकारी समूह का गठन हो गया था। 09 सितम्बर 2001 को अमेकिा पर विमान द्वारा हमले की घटना ने इसे तीव्रता प्रदान की इसका परिणाम अफगानिस्तान युद्ध रहा। प्रधानमंत्री बाजपेयी ने इस युद्ध में अमेकिा को खुला समर्थन दिया। 2002 में भारत व अमेरिका के मध्य हस्ताक्षरित जनरल स्कॉरिटी ऑफ मिलिट्री इन्फोमेशन एग्रीमेंट (जी.ओ.एस.एस.आई.ए.) समझौता हुआ।

(1) असैनिक परमाणु ऊर्जा (2) उच्च तकनीकी सैन्य व्यापार, (3) प्रक्षेपास्त्र सुरक्षा में सहयोग पर सहमति (4) आन्तरिक सैन्य व्यापार

वहीं दूसरी ओर अटल बिहारी बाजपेयी ने अपने पुराने मित्र रूस से भी कई संधिया समझौते किये, सन् 2000 में जब रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने भारत की यात्रा से दोनों देशों के मध्य सम्बंधो को एक नई दृष्टि और ऊर्जा प्रदान की। दोनो देशों ने सामूहिक भागीदारी के सामझौते पर हस्ताक्षर किए। दोनों के सम्बंध इस दृष्टि से प्रतीत होते है।

(1) भारत 21वीं सदी की एक आर्थिक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है।

(2) भारत–रूस भी अब सुधार की ओर बढ रहे है।

(3) मूलभूत क्षेत्रीय एवं विश्व संदर्भ दोनो के विचारो मे समानता है।

(4) परमाणु मुद्दे पर भी भारत–रूस के मतभेद ज्यादा गहरे नही जिन्हे भरा जा न सकें।

(5) दोनों ही सुरक्षा के सन्दर्भ मे एक समान चुनौतियो से गुजर रहे है। अटल बिहारी बाजपेयी के कार्यकाल में दोनो देशों का व्यापार–

| सत्र | निर्यात | भारतीय निर्यात का प्रतिशत | आयात | भारतीय आयात का प्रतिशत | कुल व्यापार |
|---|---|---|---|---|---|
| 98-99 | 706.26 | 2.14 | 545.42 | 1.29 | 1254.68 |
| 99-2000 | 948.99 | 2.58 | 623.94 | 1.25 | 1572.93 |
| 2000-01 | 869.93 | 1.97 | 517.19 | 1.03 | 1387.12 |
| 2001-02 | 796.83 | 1.82 | 538.36 | 1.05 | 1332.19 |
| 2002-03 | 3407.0 | 1.3 | 2868.00 | 1.0 | 6275.00 |
| 2003-04 | 3280 | 1.1 | 4410.00 | 1.2 | 7690.00 |

दोनो देशो ने भारत–रूस व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक तकनीकी, आदि पर बल दिया।

**शिक्षा एवं सांस्कृतिक सहयोग**– 2001 में अटल बिहारी बाजपेयी की रूस यात्रा के दौरान शिक्षा संस्थाओं में सहयोग हेतु चार सहमति के ज्ञापनो (एम. ओ. यू.) पर हस्ताक्षर किये गये। इसी के अन्तर्गत भारत ने भारतीय विद्या से जुड़े तीन पीठो एवं दो सहयोगी परियोजनाओ पर हस्ताक्षर किए इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियण्टल स्टडीज, एशियन अकेडमी ऑफ साइंसेज, मास्को, सेट पीटर वर्ग, स्टेट यूनिवसिर्टी, सेट पीटर वर्ग, कुजार स्टेट यूनिवर्सिटी, तातारस्तान एवं फॉरईस्ट नेशनल यूनिवर्सिटी वलाडीवोस्तोक, प्रधानमंत्री बाजपेयी ने मास्को में डण्डो एशियन साइंस सेण्टर खोलने की घोषणा भी की। दोनो के मध्य भारत मे नई दिल्ली में जैब प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना पर भी सहमति व्यक्त की गई। इस प्रकार अटल के अटल इरादो से शिक्षा, संस्कृति क्षेत्र में भी दोनो देश के लोगो को और करीब लाने का प्रयास अटल बिहारी बाजपेयी ने किया।[9]

**पड़ोसी देशो के साथ अटल बिहारी वाजपेयी की विदेश नीति (1999–2004)**– बाजपेयी सरकार ने सत्ता मे आते ही – घोषणा की कि भारत की चिन्ताएँ आज दक्षिण एशिया से आगे भी है। जिसमे एशियाई क्षेत्रो के पड़ोसी राष्ट्र आते है, जिन्हे भारत का विस्तृत पड़ोस कहाँ जा सकता है। विदेश मंत्रालय की 2000–01 की वार्षिक रिपोर्ट मे इसका पहली बार उल्लेख किया गया जिसमें साथ लगे पड़ोसियों से इन्हे अलग बताया गया। तत्कालीन विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा ने 2004 मे कहा – 'भारत सरकार पिछले छः वर्षो (1998) से इस विस्तार का प्रयास कर रही है कि भारत एक प्रमुख शक्ति है। इस विस्तृत पड़ोस की अवधारणा में भारत अपने दक्षिण एशिया के निकट पड़ोसियों के अतिरिक्त दक्षिण, पूर्व, उत्तर एंव पश्चिम की ओर के राष्ट्रो को सम्मिलित मानता है।

मूलतः इस क्षेत्र में स्वेज नहर से लेकर दक्षिण चीन समुद्र तक का भाग आता है। जिसमें पश्चिमी एशिया–प्रशांत क्षेत्र एवं हिन्द महासागर क्षेत्र सम्मिलित है। भारत की इस विस्तृत पड़ोस की अवधारणा की पीछे चार प्रमुख कारक उत्तरदायी प्रतीत होते है–

(1) व्यापार (2) ऊर्जा (3) सुरक्षा (4) सैन्य शक्ति

वही प्रधानमंत्री वाजपेयी की दो दिवसीय पाकिस्तान यात्रा के दौरान तीन प्रमुख दस्तावेजो (1) सहमति के ज्ञापन (2) संयुक्त वक्तव्य (3) लाहौर घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। किन्तु लाहौर भावना के परिणाम

आने से पूर्व ही पाकिस्तान ने भारत पर कारगिल युद्ध कर आपसी सबंधो को पुनः वैमनष्य पूर्ण बना दिया। 2001 में आगरा शिखर वार्ता भी विफल रही। वही 13 दिसम्बर 2001 को भारतीय संसद पर पाकिस्तान के दो आतंकी संगठन लश्कर–ए–तोयबा एवं जैश–ए–मोहम्मद के आतंकवादियों ने हमला किया। इस हमले के गम्भीरता को देखते हुए प्रधानमंत्री बाजपेयी ने आर–पार की लड़ाई लड़ने की बात कही। वही गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने इसे भारत के सम्पूर्ण राजनीतिक नेतृत्व को समाप्त करने का प्रयास कहाँ। भारत ने दिसम्बर 2001 में सीमा पर तैनाती के साथ ''आपरेशन पराक्रम' की शुरूआत की यह आपरेशन भारत की ओर से पाकिस्तान पर दण्डात्मक राजनय का उदाहरण था। किन्तु बाजपेयी ने रणनीति के तहत युद्ध न कर अन्तर्राष्ट्रीय दबाब पाकिस्तान पर बनबाने में सफल रहे। अमेरिका द्वारा जैश–ए–मोहम्मद एवं लश्कर–ए–तोयबा पर प्रतिबंध लगाने के बाद पाकिस्तान ने दोनो आतंकबादी संगठनों पर कार्यवाही का नाटक रचा।[10]

नई पहल–प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने 18 अप्रैल 2003 को श्रीनगर दौरे के दौरान पाकिस्तान से 'दोस्ती का हाथ' बढ़ाकर एक नई पहल की इस पहल के साथ–साथ ट्रेक II राजनय के स्तर पर भी दोनो देशो के संसदीय शिष्ट मंडलो ने भी एक दूसरे देशो की यात्राएँ की। वही प्रधानमंत्री बाजपेयी की 22–27 जून 2003 की चीन यात्रा से नई साझेदारी संबंधो के सिद्धान्त एवं व्यापक सहयोग के साथ–साथ 01 अन्य समझौते पर भी हस्ताक्षर हुए। अटल बिहारी बाजपेयी ने श्रीलंका के प्रति भी नरम रूख किया और समय समय पर श्रीलंका सरकार से मदद की गुहार लगाई। वही नेपाल की समस्याओ को अटल सरकार ने अपनी समस्याएँ बताई। जापान, जर्मनी, फ्रांस, इग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया से भी अटल सरकार के सम्बन्ध मधुर रहे एवं व्यापारिक संधिया समझौते हुए। अटल बिहारी बाजपेयी को विदेश नीति ने पश्चिमी एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया पर अपना काफी प्रभाव डाला एवं राजनीतिक संबंध मधुर रहे, वही दक्षेस के ग्यारहवें शिखर सम्मेलन 4–6 जनवरी 2002 काठमाण्डू में अटल की नीति का प्रभाव पड़ा। गुट निपेक्ष आन्दोलन के शिखर सम्मेलन क्वालालम्पुर 20–25 फरबरी 2003 को इसके प्रति प्रतिबद्धता का चलन दिया।

**निष्कर्ष**– संयुक्त राष्ट्र संघ में हमारी स्थायी नेतृत्व की बात को आगे बढ़ाया और संयुक्त राष्ट्रसंघ के बचनो के प्रति प्रतिबंधता दोहराई। डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने अपनी पुस्तक भारतीय विदेश नीति– नए दिशा– संकेत' में भारत के लिए एक सांस्कृतिक विदेश नीति अपनाने की सिफारिश की है। आज ऐसे अनेक देश है, जहॉ वर्षो पहले भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार हुआ था। दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशो में भारतीय सांस्कृतिक दुतावास की स्थापना की जानी चाहिए। अटल जी के नेतृत्व मे जो राजनयिक उपक्रम हुए वे हमे इस बात के लिए आश्वस्त करते थे कि चाहे अमेरिका हो या रूस फिर विश्व का कोई अन्य छोटा बड़ा देश भारत समस्तीय पर राजनय करने में सक्षम देश है। अटल बिहारी बाजपेयी का राजनीतिक नेतृत्व ने भारत की विदेश नीति को न केवल सफल बनाया बल्कि पूरे विश्व को अपनी कार्य शैली, नेतृत्व के दम पर भारतीय होने का एहसास दिलाया एवं भारत को अन्तर्राष्ट्रीय विरादरी में स्थापित किया। साथ ही एक महाशक्तिशाली होने का परिचय दिय। भारत निर्माण (राष्ट्र निर्माण) के स्वः पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। वह भारतीय राजनीति के एक कुशल राजनीतिज्ञ वक्ता, ईमानदारी के प्रतीक वे देशहित में निर्णय लेने वाले प्रधानमंत्री के रूप मे इतिहास में सदा याद किये जायेगे।

**संदर्भः–**

(1) बलदेव राज नैयर, अमेरिका एण्ड इण्डिया : द रूल्स ऑफ कन्फलीट, के. सी. मिश्रा, फॉरेन पॉलिसी ऑफ इण्डिया नई दिल्ली 1997 पेज नंबर 279.

(2) डॉ. रामदेव भारद्वाज– भारत एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकेदमी 2015 पेज नं. 25.

(3) डॉ. रामदेव भारद्वाज– भारत एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकेदमी 2015 पेज नं. 26, 27.

(4) विकीपिडीया, इण्टरनेट अटल बिहारी बाजपेयी।

(5) विकीपिडीया, इण्टरनेट अटल बिहारी बाजपेयी।

(6) डॉ. बी.एल.फडिया, भारत और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा 2002 पेज नं. 163, 164.

(7) डॉ. बी.एल. फडिया, भारत और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा 2002 पेज नं. 167.

(8) भास्कर (अखबार) 17 अगस्त 2018,

(9) टाइम्स ऑफ इण्डिया 17, 18 अगस्त 2018.

(10) डॉ. बी.एल.फडिया, भारत और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा 2002 पेज नं. 168.